अध्याय 2: दो गौरैया

विषय-सूची 6 प्रश्नावली · 24 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1	मेरी समझ से	5 प्रश्न
प्रश्नावली 2.2	मिलकर करें मिलान	7 प्रश्न
प्रश्नावली 2.3	पंक्तियों पर चर्चा	3 प्रश्न
प्रश्नावली 2.4	सोच-विचार के लिए	7 प्रश्न
प्रश्नावली 2.5	घर के प्राणी	1 प्रश्न
प्रश्नावली 2.6	हास्य-व्यंग्य	1 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

पिताजी ने कहा कि घर सराय बना हुआ है क्योंकि— (क) घर की बनावट सराय जैसी बहुत विशाल है (ख) घर में विभिन्न पक्षी और जीव-जंतु रहते हैं (ग) पिताजी और माँ घर के मालिक नहीं हैं (घ) घर में विभिन्न जीव-जंतु आते-जाते रहते हैं

हल

कहानी में पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है।
सराय वह स्थान है जहाँ यात्री थोड़े समय के लिए रुकते हैं और अनेक लोग आते-जाते रहते हैं।
घर में तोते, कौवे, गौरैयाँ, चूहे, चमगादड़, कबूतर, छिपकलियाँ, बरदे और चींटियाँ निरंतर आती-जाती और रहती हैं।
अतः विकल्प (ख) और (घ) दोनों सही हैं — घर में विभिन्न पक्षी और जीव-जंतु रहते हैं, और वे आते-जाते रहते हैं।

उत्तर: (ख) घर में विभिन्न पक्षी और जीव-जंतु रहते हैं; (घ) घर में विभिन्न जीव-जंतु आते-जाते रहते हैं।

प्रश्न 2

कहानी में 'घर के असली मालिक' किसे कहा गया है? (क) माँ और पिताजी को जिनका वह मकान है (ख) लेखक को जिसने यह कहानी लिखी है (ग) जीव-जंतुओं को जो उस घर में रहते थे (घ) मेहमानों को जो लेखक से मिलने आते थे

हल

पिताजी कहते हैं कि वे तो इस घर में महज मेहमान हैं, और घर के 'माकिल' (मालिक) तो कोई दूसरे ही हैं।
घर में चूहे, कबूतर, छिपकलियाँ, चींटियाँ, चमगादड़ और गौरैयाँ निर्बाध रूप से रहती थीं।
इसीलिए इन जीव-जंतुओं को ही घर के असली मालिक कहा गया है।

उत्तर: (ग) जीव-जंतुओं को जो उस घर में रहते थे।

प्रश्न 3

गौरैयों के प्रति माँ और पिताजी की प्रतिक्रियाएँ कैसी थीं? (क) दोनों ने खुशी से घर में उनका स्वागत किया (ख) पिताजी ने उन्हें भगाने की कोशिश की लेकिन माँ ने मना किया (ग) दोनों ने मिलकर उन्हें घर से बाहर निकाल दिया (घ) माँ ने उन्हें निकालने के लिए कहा लेकिन पिताजी ने घर में रहने दिया

हल

कहानी में पिताजी बार-बार लाठी उठाकर गौरैयों को भगाने की कोशिश करते हैं।
माँ पिताजी के प्रयासों पर हँसती रहती हैं और उन्हें व्यंग्य से समझाती हैं।
माँ ने कभी सीधे गौरैयों को निकालने के लिए नहीं कहा बल्कि पिताजी को टोकती रहीं।
अतः सही विकल्प (ख) है — पिताजी ने उन्हें भगाने की कोशिश की, लेकिन माँ ने मना किया।

उत्तर: (ख) पिताजी ने उन्हें भगाने की कोशिश की लेकिन माँ ने मना किया।

प्रश्न 4

माँ बार-बार पिताजी की बातों पर मुसकराती और मज़ाक करती थीं। इससे क्या पता चलता है? (क) माँ चाहती थीं कि गौरैयाँ घर से भगाई न जाएँ (ख) माँ को पिताजी के प्रयत्न व्यर्थ लगते थे (ग) माँ को गौरैयों की गतिविधियों पर हँसी आ जाती थी (घ) माँ को दूसरों पर हँसना और उपहास करना अच्छा लगता था

हल

माँ जानती थीं कि पिताजी के सारे प्रयास बेकार हैं क्योंकि गौरैयाँ बार-बार लौट आती थीं।
माँ व्यंग्य से बोलती थीं — 'छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!'
इससे पता चलता है कि माँ को पिताजी के प्रयत्न व्यर्थ लगते थे।
माँ गौरैयों को निकालना नहीं चाहती थीं और पिताजी के हर कदम पर हँसती रहती थीं।

उत्तर: (ख) माँ को पिताजी के प्रयत्न व्यर्थ लगते थे।

प्रश्न 5

कहानी में गौरैयों के बार-बार लौटने को जीवन के किस पहलू से जोड़ा जा सकता है? (क) दूसरों पर निर्भर रहना (ख) असफलताओं से हार मान लेना (ग) अपने प्रयास को निरंतर जारी रखना (घ) संघर्ष को छोड़कर नए रास्ते अपनाना

हल

गौरैयाँ बार-बार घर से निकाले जाने के बावजूद लौटती रहीं।
वे किचन के दरवाजे से, दरवाजे के नीचे से, रोशनदान से — हर संभव रास्ते से घर में घुसती रहीं।
यह दृढ़ निश्चय और निरंतर प्रयास का प्रतीक है।
जीवन में भी असफलता से डरे बिना प्रयास जारी रखने वाले ही सफल होते हैं।

उत्तर: (ग) अपने प्रयास को निरंतर जारी रखना।

प्रश्नावली 2.2 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

पाठ से चुनकर नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। प्रत्येक वाक्य के सामने दो-दो अर्थ दिए गए हैं। इन्हें इनके सबसे उपयुक्त अर्थ से मिलाइए। वाक्य: 'वह शोर मचता है कि कानों के परदे फट जाएँ, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं!' अर्थ (i): पक्षियों का शोर बहुत तेज़ होता है, लेकिन लोग उसे संगीत की तरह सराहते हैं। अर्थ (ii): पिताजी को पक्षियों का चहकना शोर जैसा लगता था लेकिन लोगों को वह संगीत जैसा लगता था।

हल

वाक्य में 'शोर' और 'गाना' दो विपरीत भाव हैं।
पिताजी के लिए पक्षियों की आवाज़ कानफोड़ू शोर थी, जबकि आम लोगों के लिए वही आवाज़ संगीत थी।
अतः अर्थ (ii) सबसे उपयुक्त है — पिताजी को पक्षियों का चहकना शोर जैसा लगता था लेकिन लोगों को वह संगीत जैसा लगता था।

उत्तर: उपयुक्त अर्थ (ii): पिताजी को पक्षियों का चहकना शोर जैसा लगता था लेकिन लोगों को वह संगीत जैसा लगता था।

प्रश्न 2

वाक्य: 'आँगन में आम का पेड़ है। तरह-तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते हैं।' अर्थ (i): आम के पेड़ पर अलग-अलग प्रकार के पक्षी हर समय निवास करते हैं। अर्थ (ii): पक्षी पेड़ पर तंबू लगाकर रहते हैं जैसे किसी मेले में डेरा डाला जाता है।

हल

'डेरा डालना' मुहावरे का अर्थ है स्थायी रूप से टिककर रहना।
पक्षी आम के पेड़ पर स्थायी रूप से रहते हैं।
अर्थ (i) शाब्दिक और सटीक है — पेड़ पर सदा पक्षी रहते हैं।
अर्थ (ii) हास्यपूर्ण कल्पना है।
अतः अर्थ (i) सबसे उपयुक्त है।

उत्तर: उपयुक्त अर्थ (i): आम के पेड़ पर अलग-अलग प्रकार के पक्षी हर समय निवास करते हैं।

प्रश्न 3

वाक्य: 'वह धमा-चौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते।' अर्थ (i): पिताजी की भागदौड़ और शोर इतना होता है कि घर के चूहे चैन से सो नहीं पाते। अर्थ (ii): चूहों की भागदौड़ और शोर इतना होता है कि घर के लोग चैन से सो नहीं पाते।

हल

वाक्य में 'हम लोग' यानी घर के मनुष्यों का सोना मुश्किल हो जाता है।
यह धमा-चौकड़ी चूहों की भागदौड़ के कारण मचती है।

अतः अर्थ (ii) सबसे उपयुक्त है।

उत्तर: उपयुक्त अर्थ (ii): चूहों की भागदौड़ और शोर इतना होता है कि घर के लोग चैन से सो नहीं पाते।

प्रश्न 4

वाक्य: 'वह समझते हैं कि माँ उनका मज़ाक उड़ा रही हैं।' अर्थ (i): पिताजी माँ का मज़ाक समझ जाते हैं। अर्थ (ii): पिताजी को ऐसा भ्रम होने लगता है कि माँ उनकी चेष्टाओं का उपहास कर रही हैं।

हल

माँ व्यंग्य में बोलती हैं और उनकी बातें सुनकर पिताजी को लगता है कि माँ उन्हें चिढ़ा रही हैं।
'समझते हैं' — यहाँ 'अनुमान लगाना' या 'भ्रम होना' का अर्थ है।
अतः अर्थ (ii) सबसे उपयुक्त है — पिताजी को भ्रम होने लगता है कि माँ उनका उपहास कर रही हैं।

उत्तर: उपयुक्त अर्थ (ii): पिताजी को ऐसा भ्रम होने लगता है कि माँ उनकी चेष्टाओं का उपहास कर रही हैं।

प्रश्न 5

वाक्य: 'पिताजी ने लाठी दीवार के साथ लिकाकर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे।' अर्थ (i): पिताजी ने लाठी एक ओर रख दी और गर्व से, विजयी मुद्रा में बैठ गए। अर्थ (ii): पिताजी की छाती और साँस फूलने लगी और उन्होंने लाठी एक ओर रख दी।

हल

पिताजी ने गौरैयों को बाहर निकालने में सफलता पाई थी, इसलिए वे विजय के भाव से बैठे।
'छाती फैलाना' मुहावरे का अर्थ है — गर्व से सीना तानकर बैठना।
अतः अर्थ (i) सबसे उपयुक्त है।

उत्तर: उपयुक्त अर्थ (i): पिताजी ने लाठी एक ओर रख दी और गर्व से, विजयी मुद्रा में बैठ गए।

प्रश्न 6

वाक्य: 'इतने में रात पड़ गई।' अर्थ (i): रात किसी भारी चीज़ की तरह ऊपर से गिर पड़ी। अर्थ (ii): कहानी की घटनाओं के बीच धीरे-धीरे रात हो गई और अँधेरा छा गया।

हल

'रात पड़ गई' सरल अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ है रात हो गई।
इतने में — यानी इतने समय में — सब उलझे रहे और रात आ गई।
अर्थ (i) कल्पनाशील व्याख्या है।
अर्थ (ii) सरल और सटीक है।
अतः अर्थ (ii) सबसे उपयुक्त है।

उत्तर: उपयुक्त अर्थ (ii): कहानी की घटनाओं के बीच धीरे-धीरे रात हो गई और अँधेरा छा गया।

प्रश्न 7

वाक्य: 'जब हम लोग नीचे उतरकर आए तो वे फिर से मौजूद थीं और मज़े से बैठी मल्हार गा रही थीं।' अर्थ (i): गौरैयाँ फिर से लौट आई थीं और शांत व प्रसन्न भाव से चहचहा रही थीं जैसे कोई राग गा रही हों। अर्थ (ii): गौरैयाँ शास्त्रीय संगीत का अभ्यास कर रही थीं और 'राग मल्हार' गा रही थीं।

हल

'मल्हार गाना' भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रसिद्ध राग है जो वर्षा ऋतु से जुड़ा है।
यहाँ लेखक ने व्यंग्य से गौरैयों के चहकने को 'मल्हार गाना' कहा है।
गौरैयाँ वास्तव में शास्त्रीय संगीत नहीं जानतीं, बल्कि प्रसन्नता से चहक रही थीं।
अतः अर्थ (i) सबसे उपयुक्त है।

उत्तर: उपयुक्त अर्थ (i): गौरैयाँ फिर से लौट आई थीं और शांत व प्रसन्न भाव से चहचहा रही थीं जैसे कोई राग गा रही हों।

प्रश्नावली 2.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

नीचे दी गई पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए — 'अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं। अब तो इन्होंने यहाँ घोंसला बना लिया है।'

हल

यह पंक्ति माँ ने कही जब गौरैयों ने पंखे के गोले में घोंसला बना लिया था।
माँ का भाव है कि अब गौरैयों को यह घर अपना लग चुका है।
पहले जब वे नई-नई आई थीं तब भगाया जा सकता था — वे अपरिचित थीं, जड़ें नहीं जमी थीं।
अब घोंसला बन जाने के बाद वे अपने घर से नहीं जाएँगी।
यह पंक्ति यह भी संकेत देती है कि किसी को उसके घर से निकालना बहुत कठिन होता है।

उत्तर: जब किसी स्थान पर कोई जड़ें जमा ले (घर/घोंसला बना ले), तो उसे वहाँ से निकालना बहुत कठिन हो जाता है। पहले रोकना आसान था, अब असंभव है।

प्रश्न 2

नीचे दी गई पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए — 'एक दिन अंदर नहीं घुस पाएँगी, तो घर छोड़ देंगी।'

हल

यह पंक्ति पिताजी ने कही — उनका विश्वास था कि लगातार रोकने से गौरैयाँ हार मानकर चली जाएँगी।
पिताजी को लगता था कि दरवाजे बंद रखने से एक दिन गौरैयाँ निराश होकर दूसरी जगह चली जाएँगी।
लेकिन कहानी में यह सोच गलत सिद्ध हुई — गौरैयाँ हर बार नया रास्ता खोज लेती थीं।
यह पंक्ति पिताजी की आशावादी (लेकिन भ्रामक) सोच को दर्शाती है।

उत्तर: पिताजी को विश्वास था कि अगर एक बार गौरैयाँ घर में न घुस पाईं, तो वे हार मानकर घर छोड़ देंगी — पर यह सोच कहानी में गलत साबित हुई।

प्रश्न 3

नीचे दी गई पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए — 'किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़ देना चाहिए।'

हल

यह पंक्ति पिताजी ने तब कही जब वे स्टूल पर चढ़कर गौरैयों का घोंसला तोड़ने लगे।
शाब्दिक अर्थ: किसी को स्थायी रूप से हटाना हो तो उसके आश्रय (घर/घोंसले) को नष्ट कर दो।
व्यापक अर्थ: जब कोई व्यक्ति या प्राणी किसी स्थान पर स्थायी हो जाता है, तो उसे वहाँ से हटाने के लिए उसके आधार को ही नष्ट करना होगा।
यह पंक्ति व्यंग्यात्मक भी है क्योंकि जब बच्चों की आवाज़ आई, पिताजी का हृदय-परिवर्तन हो गया।

उत्तर: किसी को स्थायी रूप से हटाने के लिए उसके घर/आश्रय को ही तोड़ देना चाहिए — यह पिताजी की कठोर नीति थी, पर बच्चों को देखकर उनका मन बदल गया।

प्रश्नावली 2.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

लेखक के घर में चिड़िया ने अपना घोंसला कहाँ बनाया? उसने घोंसला वहीं क्यों बनाया होगा?

हल

लेखक के घर की बैठक की छत में लगे पंखे के गोले (Hub) में गौरैयों ने घोंसला बनाया।
पंखा आमतौर पर ऊँचाई पर होता है, इसलिए वहाँ सुरक्षा अधिक थी।
पंखे का गोला एक बंद और गर्म स्थान था जो घोंसले के लिए उपयुक्त था।
वहाँ तक इंसान का हाथ आसानी से नहीं पहुँच सकता था।
गौरैयों ने पहले पूरा घर देखा और उड़-उड़कर निरीक्षण किया, फिर यह सबसे सुरक्षित और उपयुक्त स्थान चुना।

उत्तर: बैठक की छत में लगे पंखे के गोले में। यह स्थान ऊँचाई पर, बंद और सुरक्षित था, जहाँ तक इंसान का हाथ आसानी से नहीं पहुँच सकता था।

प्रश्न 2

क्या आपको लगता है कि पशु-पक्षी भी मनुष्यों के समान परिवार और घर का महत्व समझते हैं? कहानी से उदाहरण दीजिए।

हल

हाँ, इस कहानी से स्पष्ट है कि पशु-पक्षी भी घर और परिवार का महत्व समझते हैं।
गौरैयों ने अपना घोंसला पंखे के गोले में बनाया और अंडे दिए — यह परिवार बसाने का प्रयास था।
जब पिताजी घोंसला तोड़ने लगे तो बाहर बैठी दोनों गौरैयाँ दुबली और काली पड़ गईं और चहकना बंद कर दिया — यह बच्चों की चिंता में माँ-बाप की दशा को दर्शाता है।
जैसे ही बच्चों की 'ची-ची' सुनाई दी, माँ-बाप गौरैयाँ 'झट से उड़कर अंदर आ गए और उनसे जा मिले' — यह परिवार का गहरा प्रेम दर्शाता है।

उत्तर: हाँ। गौरैयों ने घोंसला बनाकर परिवार बसाया, घोंसला टूटने पर माँ-बाप दुबले-काले पड़ गए, और बच्चों की आवाज़ सुनते ही झट दौड़कर आए — यह पशु-पक्षियों में भी परिवार-प्रेम का प्रमाण है।

प्रश्न 3

'अब मैं हार मानने वाला आदमी नहीं हूँ।' — यह पिताजी का कथन है। इससे पिताजी के स्वभाव के कौन-से गुण उभरकर आते हैं?

हल

इस कथन से पिताजी का जिद्दी और दृढ़निश्चयी स्वभाव उभरता है।
वे बार-बार हार जाने के बावजूद हार मानने को तैयार नहीं थे।
उनमें आत्मविश्वास और हठ का भाव था — वे गौरैयों को एक चुनौती मानते थे।

यह पंक्ति व्यंग्यात्मक भी है क्योंकि वास्तव में पिताजी हर बार गौरैयों से 'हार' जाते थे।
साथ ही, अंत में बच्चों को देखकर उनका हृदय पिघल गया — यह उनके संवेदनशील स्वभाव को भी दर्शाता है।

उत्तर: पिताजी के दृढ़निश्चय, जिद्दी स्वभाव और आत्मविश्वास का पता चलता है। वे किसी भी चुनौती से पीछे नहीं हटते — हालाँकि गौरैयों के सामने उनकी यह जिद बार-बार विफल हुई।

प्रश्न 4

कहानी में गौरैयों के व्यवहार में कब और कैसा बदलाव आया? यह बदलाव क्यों आया? (संकेत — कहानी में खोजिए कि उन्होंने गाना कब बंद कर दिया?)

हल

पहले गौरैयाँ मस्ती से 'मल्हार' गाती थीं और निर्भय घूमती थीं।
जब पिताजी घोंसला तोड़ने लगे, तब बाहर दीवार पर बैठी दोनों गौरैयाँ चुप हो गईं।
वे 'कुछ-कुछ दुबला गई थीं, कुछ-कुछ काली पड़ गई थीं। अब वे चहक भी नहीं रही थीं।'
यह बदलाव इसलिए आया क्योंकि उनका घोंसला टूट रहा था जिसमें उनके बच्चे थे।
बच्चों की सुरक्षा की चिंता ने उनके व्यवहार को बदल दिया — आनंद की जगह भय और चिंता आ गई।

उत्तर: जब पिताजी घोंसला तोड़ने लगे, गौरैयाँ चुप और उदास हो गईं — दुबली और काली पड़ गईं। यह बदलाव बच्चों की सुरक्षा की चिंता के कारण आया।

प्रश्न 5

गौरैयों ने किन-किन स्थानों से घर में प्रवेश किया? सूची बनाइए।

हल

कहानी में गौरैयों के घर में प्रवेश के अनेक रास्तों का उल्लेख मिलता है:

1. किचन की ओर खुलने वाले दरवाजे से — पहली बार बाहर निकालने पर वे इसी से गई थीं।
2. दरवाजों के नीचे की दरार से — 'दरवाजे के नीचे से आ गई हैं' (माँ ने बताया)।
3. रोशनदान से — जिसका एक शीशा टूटा हुआ था, उससे वे अंदर आ गईं।
4. पहले-पहले खुले दरवाजों से — जब वे पहली बार घर का निरीक्षण करने आई थीं।

उत्तर: गौरैयाँ इन स्थानों से घर में घुसीं: (1) किचन के दरवाजे से, (2) दरवाजों के नीचे की दरार से, (3) टूटे शीशे वाले रोशनदान से।

प्रश्न 6

इस कहानी को कौन सुना रहा है? आपको यह बात कैसे पता चली?

हल

यह कहानी लेखक/बेटा सुना रहा है — वह घर का तीसरा सदस्य है।
कहानी में 'मैं' और 'हम' का प्रयोग प्रथम-पुरुष (first-person) में है — 'हम तीन ही व्यक्ति रहते हैं — माँ, पिताजी और मैं।'

घटनाओं में वह स्वयं भाग लेता है — पिताजी ने उसे दरवाजे बंद करने के लिए कहा, वह भागकर दरवाजे बंद करता है।

कहानी के अंत में वह अवाक होकर देखता है — 'मैं अवाक् उनकी ओर देखता रहा।'

इससे स्पष्ट होता है कि यह कहानी घर के बेटे (लेखक) के दृष्टिकोण से लिखी गई है।

उत्तर: यह कहानी घर का बेटा/लेखक सुना रहा है। 'मैं' और 'हम' का प्रथम-पुरुष प्रयोग, घटनाओं में स्वयं भाग लेना (दरवाजे बंद करना, देखते रहना) और 'माँ, पिताजी और मैं' जैसे उल्लेख से यह स्पष्ट होता है।

प्रश्न 7

माँ बार-बार क्यों कह रही होंगी कि गौरैयाँ घर छोड़कर नहीं जाएँगी?

हल

माँ व्यावहारिक और अनुभवी थीं — उन्होंने गौरैयों के दृढ़ निश्चय और स्नेह को पहचाना।

जब गौरैयाँ पहले आईं, घर का निरीक्षण किया और घोंसला बनाया — माँ समझ गईं कि यह उनका घर बन चुका है।

गौरैयाँ बार-बार निकाले जाने पर भी लौटती रहीं — माँ यह देख रही थीं।

माँ को लगा कि जहाँ कोई अपना घर बना ले और अंडे दे दे, वहाँ से वह नहीं जाता।

माँ पिताजी को यह बताना चाहती थीं कि उनकी कोशिश व्यर्थ है।

उत्तर: माँ जानती थीं कि जब गौरैयाँ घर को अपना मान लें, घोंसला बना लें और अंडे दे दें, तो वे नहीं जाएँगी। बार-बार लौटना उनकी दृढ़ता का प्रमाण था। माँ यही बात पिताजी को समझाना चाहती थीं।

प्रश्नावली 2.5 — घर के प्राणी

प्रश्न 1

कहानी में लेखक के घर में अनेक प्राणी रहते थे। लेखक ने उनका वर्णन ऐसे किया है जैसे वे भी मनुष्यों की तरह व्यवहार करते हों। कहानी में से चुनकर उन प्राणियों की सूची बनाइए और बताइए कि वे मनुष्यों जैसे कौन-कौन से काम करते थे? (क) बिल्ली — 'फिर आऊँगी' कहकर चली जाती है। (ख) ____ (ग) ____ (घ) ____ (ङ) ____

हल

लेखक ने घर के प्राणियों का वर्णन मानवीकरण (Personification) के माध्यम से किया है:

(क) बिल्ली — मन आया तो अंदर आकर दूध पी गई, न मन आया तो बाहर से ही 'फिर आऊँगी' कहकर चली जाती है।

(ख) बूढ़ा चूहा — अँगीठी के पीछे बैठना पसंद करता है; शायद बूढ़ा है, उसे सर्दी बहुत लगती है।

(ग) दूसरा चूहा — बाथरूम की टंकी पर चढ़कर बैठना पसंद है; उसे शायद गर्मी बहुत लगती है।

(घ) चमगादड़ — शाम पड़ते ही कमरों के आर-पार पर फैलाए कसरत करने लगते हैं।

(ङ) गौरैयाँ — मज़े से बैठकर गाना गाती थीं, घर का निरीक्षण करती थीं, जैसे किराएदार घर देखता हो।

उत्तर: (क) बिल्ली: मन पड़े तो आना, 'फिर आऊँगी' कहकर जाना। (ख) बूढ़ा चूहा: ठंड से बचने को अँगीठी के पास बैठना। (ग) दूसरा चूहा: गर्मी के कारण टंकी पर बैठना। (घ) चमगादड़: शाम को नियमित कसरत करना। (ङ) गौरैयाँ: मज़े से गाना गाना और घर का मुआयना करना।

प्रश्नावली 2.6 — हास्य-व्यंग्य

प्रश्न 1

कहानी में माँ ने व्यंग्य से कहा — 'छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!' व्यंग्य का अर्थ स्पष्ट कीजिए और कहानी में से ऐसे वाक्य चुनकर लिखिए जिन्हें पढ़कर हँसी आई।

हल

व्यंग्य का अर्थ है — हँसी-मज़ाक या उपहास के माध्यम से किसी कमी, बुराई या विडंबना को उजागर करना।
माँ के इस वाक्य में व्यंग्य है कि जो पिताजी चूहों तक को नहीं निकाल सके, वे गौरैयों को क्या निकालेंगे।
कहानी के हास्यपूर्ण वाक्य:
— 'पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है। हम तो जैसे यहाँ मेहमान हैं, घर के मालिक तो कोई दूसरे ही हैं।'
— 'जो भी पक्षी पहाड़ों-घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुँचता है, पिताजी कहते हैं वही सीधा हमारे घर पहुँच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवाकर आया हो।'
— 'एक दरवाजा खुला छोड़ो, बाकी दरवाजे बंद कर दो। तभी ये निकलेंगी।' (पिताजी को इस सरल सुझाव की जरूरत क्यों नहीं सूझी?)
— 'चलो, दो तिनके तो निकल गए, अब बाकी दो हज़ार भी निकल जाएँगे!' (माँ की व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी)
व्यंग्य वाले वाक्य: 'छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे!' और 'चलो, दो तिनके तो निकल गए!'

उत्तर: व्यंग्य = हँसी-मज़ाक के माध्यम से किसी कमी को उजागर करना। कहानी में माँ के वाक्य व्यंग्यपूर्ण हैं — जैसे 'चूहों को नहीं निकाल पाए, चिड़ियों को क्या निकालेंगे' और 'दो तिनके निकले, अब दो हज़ार भी निकल जाएँगे'।